जब चुदी-चूत की हुई सिकाई-2

“एक बार अपने आशिक से चुदाई करवा लेने के बाद
मैं नहीं चाहती थी कि वो किसी और लड़की को देखे।
मैं कुछ ज्यादा बन संवर कर कॉलेज गयी और शाम
को एक बार फिर … …”

Story By: हिमांशु बजाज (himanshubajaj)
Posted: Saturday, December 8th, 2018
Categories: जवान लड़की
Online version: जब चुदी-चूत की हुई सिकाई-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

जब चुदी-चूत की हुई सिकाई-2

इस गर्म कहानी के पिछले भाग

जब चुदी-चूत की हुई सिकाई-1

में अभी तक आपने पढ़ा कि मैं माँ के साथ बाज़ार से आने के बाद खाना बनाने लगी, सबने खाना खा लिया और हम टीवी देखने लगे। टीवी देखते-देखते मेरे कमरे में से मेरे फोन के रिंग की आवाज़ बाहर तक आने लगी। माँ ने मुझसे कहा कि तुझे फोन की रिंग सुनाई नहीं दे रही क्या … तो मुझे ना चाहते हुए भी उठकर फोन चेक करना पड़ा। मैं जानती थी कि इस वक्त निशा का फोन नहीं आएगा, कोई फोन करेगा तो वो देवेन्द्र ही।

> मैंने अंदर जाते हुए दरवाज़ा हल्के से ढाल दिया। फोन बेड पर पड़ा हुआ रिंग कर रहा था। उठाकर देखा तो देवेन्द्र फोन पर फोन किए पागल हुआ जा रहा था।
> मैंने एक कोने में जाकर चुपके से हल्लो किया और कहा- यार, मैं माँ-पापा के साथ टीवी देख रही हूं, अभी बात नहीं कर सकती।
> वो बोला- अच्छा सुन, इतना बता कल कॉलेज आ रही है ना …
> मैंने फुसफुसाते हुए कहा- हां, आ रही हूं, अब फोन रखो।
> फोन रखकर मैं कमरे से बाहर आई तो माँ किचन में चूल्हे के पास खड़ी हुई थी। मैंने माँ की तरफ देखा और चुपचाप जाकर टीवी देखने लगी। डर रही थी कि माँ को कहीं शक तो नहीं हो गया है.

मैं चुप-चाप बैठकर टीवी देखने लगी। माँ रसोई से चाय बनाकर ले आई। माँ ने पूछा- किसका फोन था ?

“माँ … निशा का ही फोन था, कल कॉलेज आने के लिए पूछ रही थी।”
मेरा जवाब सुनकर माँ ने चाय मुझे पकड़ा दी।

रात के 9.30 बजे के करीब जब ठंड ज्यादा बढ़ने लगी तो माँ ने कहा- टीवी को बंद कर दे और सो जा। सुबह तुझे कॉलेज भी जाना है!
मैंने टीवी बंद कर दिया।
माँ वहीं हॉल में सोती थी जबकि मैं और पापा अलग-अलग कमरे में सोते थे।
मैंने अंदर जाकर अपने कमरे का दरवाज़ा ढाल लिया और कंबल ओढ़कर लेट गई। जल्दी ही मुझे नींद भी आ गई।

सुबह 5 बजे माँ ने मुझे फिर उठा दिया। उठकर मैंने माँ और पापा को चाय बनाकर दी और सुबह के नाश्ते की तैयारी करने लगी। कहने को तो वो नाश्ते का समय होता है मगर गाँव में नाश्ते जैसा कुछ नहीं किया जाता।
लोग सुबह सब्जी और रोटी बना लेते हैं। उसके साथ घी, लस्सी या दूध लिया जाता है।
मैंने आटा करके रख दिया और नहाने के लिए बाथरूम में चली गई।

माँ ने मिट्टी के चूल्हे पर पानी पहले से ही गर्म कर रखा था। गाँव में गीजर, रॉड वगैरह बहुत कम इस्तेमाल होती हैं। ज्यादातर काम मिट्टी के चूल्हों पर ही किया जाता है। मगर अब वक्त के साथ धीरे-धीरे सब बदल गया है। शहर के तौर-तरीके गाँव के लोगों ने भी अपनाने शुरू कर दिये हैं और उन्हीं की बदौलत अब बीमारियाँ गाँव का रुख करने लगी हैं। नहीं तो पहले के टाइम में गाँव के लोग बहुत कम बीमार पड़ते थे।
खैर … कहानी पर आती हूं।

नहाते वक्त मैंने अपनी योनि को गर्म पानी से सेंका। उसकी सूजन तो उतर चुकी थी मगर योनि के होंठों पर अभी हल्की लाली रह गई थी। मैंने हल्के हाथ से तौलिये से अपनी योनि को अच्छी तरह पौंछ लिया और लाल रंग की पैंटी पहन ली। अभी बाल गीले थे

इसलिए मैं नहाने के बाद तुरंत ब्रा नहीं पहनती थी। क्योंकि बालों से गिरता पानी ब्रा को भिगो देता था और ब्रा का गीलापन मुझसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होता था। इसलिए ऊपर से कमीज़ डालकर मैं बाथरूम से बाहर आ गई।

अलमारी खोलकर सोचने लगी कि आज क्या पहनूँ … मन तो कर रहा था कि कुछ ऐसा पहनूँ कि देवेन्द्र मुझ पर लट्टू हो जाए क्योंकि अब मुझे उससे लगाव होने लगा था। मैं नहीं चाहती थी कि वो मेरे अलावा किसी और लड़की को देखे।
इसलिए मैंने अपना एक टाइट सूट निकाला जो मैंने बस एक बार ही पहना था। दरअसल उसकी फिटिंग ज्यादा टाइट थी इसलिए मैंने एक बार पहन कर उसको दोबारा कभी नहीं पहना था। नीले रंग का सूट था और उसके नीचे सफेद पजामी थी और सफेद ही दुपट्टा। वो मेरा पसन्दीदा रंग है। वो कहते हैं ना जो मन भाए वो जग भाए …

इसलिए कमीज निकाल कर मैंने बालों को सुखाना शुरू किया। क्योंकि हो सकता था आज देवेन्द्र भी मिलने आ जाए। क्योंकि कल जिस तरह से वो पूछ रहा था उसके दिमाग में ज़रूर कुछ न कुछ चल रहा होगा। इसलिए मैं भी पूरी तैयारी के साथ जाना चाहती थी।

बालों को सुखाने के बाद मैंने उनको बजाज तेल से मसाज किया, ताकि बाल ज्यादा ड्राइ न लगें। दीवार घड़ी पर देखा तो 7.30 बज चुके थे। मैंने सोचा 8 बजे के बाद निशा कभी भी टपक पड़ेगी इसलिए जल्दी से तैयार होना शुरू हो गई।

कमीज़ निकालकर मैचिंग ब्रा ढूंढने लगी। हवा में लटकते मेरे नंगे वक्षों को ठंड लग रही थी। ब्रा नहीं मिली, इसलिए सफेद ही पहन ली। जल्दी से गले में डालकर शर्ट भी फंसा लिया और पजामी पहन ली। दुपट्टे की क्रीज़ बनाकर कंधे पर डाल लिया और किताबें बेड पर रख लीं।

रसोई में जाकर चाय गर्म की और एक रोटी पर थोड़ा सा अचार रखकर फटाफट खाने

लगी। इतने में ही गाड़ी का हॉर्न बजा। मैं समझ गई कि निशा महारानी पहुंच चुकी है। मेरे कुछ बोलने से पहले माँ ने ही आवाज़ लगा दी- तेरा सिंगार ना होया के इब लग ? वा छोरी अपने घर तै गाड़ी मैं त्यार हो कै भी आ ली !
मैंने कहा- बस जाऊं हूं मां।

मैंने बेड से किताबें उठाईं और दुपट्टे को संभालते हुए मेन गेट से बाहर निकल गई।
घड़ी में टाइम देखा तो 8.30 बजे थे।
गाड़ी में बैठकर निशा से कहा- आज आधा घंटा पहले ही आ गई। इतनी जल्दी कॉलेज जाकर क्या करेगी।
वो बोली- भैया को जल्दी जाना था तो उन्होंने कहा कि तुम दोनों को छोड़ता हुआ चला जाऊंगा।
मैं मुकेश से नज़रें नहीं मिलाना चाहती थी क्योंकि वो मुझे देवेन्द्र के नीचे देख चुका था। इसलिए मैंने बात वहीं पर खत्म कर दी।

बाहर काफी कोहरा था और मुकेश ने गांव की मेन सड़क पर गाड़ी दौड़ा दी। जल्दी ही हम कॉलेज पहुंच गए। कॉलेज जाकर देखा तो क्लास खाली पड़ी थी।
मैंने निशा को कहा- देख अब यहां अंडे देगी बैठी-बैठी। कोई भी नहीं आया है अभी तक।
निशा बोली- तो क्या हो गया ? जब भैया को जल्दी थी तो मैं क्या करती। मुझे तो गाड़ी चलानी नहीं आती ना। और आती भी तो मेरे घरवाले मुझे अकेले नहीं भेजते।

“तू अंकल की स्कूटी चलाना क्यों नहीं सीख लेती ?” निशा ने पूछा।
मैंने कहा- पागल है क्या … इतनी ठंड में मरवाएगी स्कूटी पर … गाड़ी ही ठीक है।
वो बोली- और बता क्या चल रहा है ?
मैंने कहा- कुछ नहीं।

“आज मुकेश कहीं जा रहा है क्या ?” मैंने पूछा।

वो बोली- हां, उसके किसी फ्रेंड की शादी है, इसलिए काम में हाथ बंटाने जा रहा है। उनके यहां पर आज खाना है।
मैंने कहा- तो छुट्टी के टाइम तक आ जाएंगे ना वो ?
निशा बोली- तुझे क्या करना है। कोई न कोई तो आएगा ही ना। क्यूं मेरा दिमाग खाए जा रही है।

तभी क्लास में दूसरी लड़कियाँ भी आना शुरू हो गईं। हंसी मज़ाक में दिन जल्दी ही कट गया।

छुट्टी हुई तो हम कॉलेज के गेट के बाहर इंतज़ार करने लगे। जब इंतज़ार करते-करते काफी देर हो गई तो मैंने निशा से कहा- अगर मुकेश नहीं आ रहा तो मैं पापा को फोन कर देती हूं।
निशा ने कहा- कमीनी … तू तो स्कूटी पर बैठकर उड़ जाएगी … और मैं ? रुक मैं भैया को फोन करती हूं।
निशा ने मुकेश को फोन किया तो पता लगा अभी उसे आने में और वक्त लगेगा।

कॉलेज की सारी लड़कियाँ चली गईं। बस हम दोनों ही बचीं। हमने गार्ड से कहा- भैया, हम कुछ देर अंदर बैठ जाती हैं। अभी गाड़ी आने में थोड़ा टाइम लगेगा।
कहकर हम दोनों कॉलेज के अंदर बैठ गईं।

बैठे-बैठे जब बोर होने लगी तो निशा ने बात छेड़ दी।
बोली- तू भैया के उस दोस्त को पहले से जानती है क्या ?
मैंने कहा- तुझे किसने बताया ?
वो बोली- मैं तो तुझसे पूछ रही हूं।
मैंने भी छिपाया नहीं और उसको बता दिया- हां, हम दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे।
उसने कहा- यार … है तो बड़ा सजीला वो ! तेरा मन नहीं करता क्या उसे देखकर ?

मैंने कहा- चल हट ! पागल कहीं की।
वो बोली- आए हाए … तेरी जगह मैं होती तो आंखें बिछा देती उसके लिए।

मैं मन ही मन फूली नहीं समा रही थी।
वो था ही ऐसा। लड़कियाँ भला उसको देख कर अनदेखा कर दें ऐसा हो ही नहीं सकता था। लेकिन मैंने निशा को सारी सच्चाई बताना ठीक नहीं समझा। उसका हाजमा वैसे ही खराब रहता है, अगर बात नहीं पची तो पूरे कॉलेज में फैल जाएगी।

इन्हीं सब बातों में बैठे-बैठे शाम के 5 बज गए। मैंने कहा- मुकेश को फोन कर ले ना। ऐसे कब तक बैठे रहेंगे यहां ?
वो बोली- जब भैया ने बोला है कि वो आएंगे तो फिर भी तुझे चैन नहीं है क्या ?
मैंने कहा- पागल, शाम होने लगी है। 5.30 बजे तो अंधेरा होना शुरू हो जाएगा।

मेरी बात खत्म हुई ही थी कि एक गाड़ी कॉलेज के गेट के बाहर आकर रुकी। मगर वो मुकेश की गाड़ी नहीं थी। शीशे काले थे जिनमें से अंदर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। गाड़ी ने हॉर्न दिया तो गार्ड ने पास जाकर पूछा- मगर शीशे के सामने गार्ड के आ जाने से अंदर कौन बैठा है ये नहीं पता चल पाया।
गार्ड ने हम दोनों को बुलाते हुए कहा- मैडम, आपकी गाड़ी आ गई है।
हम दोनों हैरान थीं।

तभी निशा का फोन बजने लगा- उसने पिक किया तो मुकेश ने बताया कि देवेन्द्र गाड़ी लेकर कॉलेज के गेट पर खड़ा होगा। सफेद रंग की सैंट्रो है। तुम दोनों आज उसके साथ आ जाओ …मुझे यहां से आने में देर हो जाएगी।
निशा ने फोन काटकर कहा- चल, वो हैंडसम आया है … तेरा स्कूल वाला ! आज तो बोल ही दे।
मैंने कहा- बकवास मत कर। ऐसा कुछ नहीं है, जैसा तू सोच रही है।

कहकर हम दोनों गाड़ी की तरफ बढ़ चलीं।

गाड़ी में बैठते ही उसने गाड़ी स्टार्ट की और निशा के घर वाले रास्ते पर दौड़ा दी। मैंने सामने वाले शीशे में उसकी आंखें देखीं। उसका ध्यान गाड़ी चलाने में था।
जल्दी ही निशा का घर आ गया। उसने मुस्कुराते हुए बाय कहा और देवेन्द्र ने गाड़ी घुमाई और शहर से निकलकर मेरे गाँव वाले रोड पर लाकर दौड़ा दी। मैं चुपचाप बैठी थी। मैंने उसे चुपके से देखा।

जब मैं देख रही थी तो उसने भी मुझे देख लिया.
“के देखै है माणस ?” वो बोला।
मैंने कहा- कुछ नहीं !
वो बोला- बता तो दे ?
मैंने कहा- कुछ नहीं !

गाड़ी सड़क पर दौड़ती जा रही थी। शीशे काले होने की वजह से बाहर जैसे अंधेरा सा लग रहा था। क्योंकि शाम तो पहले ही होने वाली थी और सर्दी का मौसम था।
जब हम आधे रास्ते पर पहुंच गए तो उसने गाड़ी रास्ते में सड़क से थोड़ी हटकर खड़ी कर ली।
मैंने कहा- क्या हुआ ?
वो बोला- यार …जोर से लगी है, तू बैठ, मैं अभी आया.

वो गाड़ी से उतर गया, उसने ब्लू जींस और गाजरी रंग की शर्ट पर ट्रैक सूट का अपर डाला हुआ था जिसमें उसके डोलों के कट भी आज अलग नज़र आ रहे थे। उतरकर उसने अपनी टाइट जींस को एडजस्ट किया और गाड़ी के पीछे कहीं चला गया।
मैं बैठी हुई उसका इंतज़ार करने लगी। डर भी लग रहा था कि कहीं गांव की तरफ जाने वाला कोई जान-पहचान का देख न ले।

कुछ देर बाद उसने सीधे पीछे वाली खिड़की खोली और मेरे साथ आकर बैठ गया।

उसने मुझे ऊपर से नीचे तक गौर से देखा।
मैं शरमा गई।
वो बोला- आज तो जनाब के रंग कुछ और ही लागै हैं … के बात ?
मैंने कहा- तुम यहां पीछे क्या कर रहे हो। जाकर गाड़ी स्टार्ट क्यों नहीं करते।
वो बोला- अच्छा ! मेरी बिल्ली और मेर तै ही म्याऊं ?
कहकर उसने मुझे अपनी तरफ खींचा और मेरे होंठों पर अपने होंठ रख दिए। वो मेरे होंठों को चूसने लगा।

जब वो मेरे होंठों को चूसता था तो अजीब सा नशा होने लगता था उसका। मैं भी उसका साथ देने लगी। उसने मेरी जर्सी के बटन खुलवा दिए और मेरे नीले टाइट सूट में तने मेरे वक्षों को ज़ोर से दबाने लगा। उसने अपने होंठ मेरे होंठ से अलग किए और बोला- आज तो गंडास हो रही है कती !
कहकर वो फिर से मेरे होंठों को चूसने लगा।

गाड़ी में हमारी सांसों की गर्माहट भरने लगी। मेरी बगल में बैठे हुए उसने मुझे अपनी गोद में लेटा लिया और मेरे वक्षों को और ज़ोर से दबाने लगा। मेरा सिर उसकी गोद में रखा हुआ था और वो मेरे ऊपर झुक आया। मुझे मेरे कंधे के नीचे उसका लिंग झटके देता हुआ महसूस होने लगा। उसने मेरे सूट को ऊपर उठाने की कोशिश की लेकिन सूट काफी टाइट था। मेरी कमर उसकी जांघों पर टिकी थी और उसका एक हाथ मेरे सिर के नीचे था। वो मुझे चूसे जा रहा था।

तभी उसने मेरी पजामी पर हाथ फेरना शुरू कर दिया। मैंने उसका हाथ हटवा दिया। लेकिन वो दोबारा से मेरी जांघों को टटोलते हुए मेरी पजामी के ऊपर मेरी योनि के ऊपर पैंटी तक पहुंच गया।

मैंने फिर उसका हाथ हटवाया।
उसने फिर से कोशिश की मगर मैं उठ खड़ी हुई।

वो बोला- क्या हुआ … मज़ा नहीं आ रहा क्या ?
मैंने कहा- बस इतना ही बहुत है.
वो बोला- क्यूं ?
मैंने कहा- नहीं यार, बस कर, आगे नहीं !

वो बोला- ऊपर से तो हाथ फेरने दे।
मैंने कहा- दुख रही है।
वो बोला- दिखा … कहां से दुख रही है।
मैंने कहा- नहीं !
वो बोला- प्लीज़ …कुछ नहीं करूंगा … एक बार दिखा तो दे, कहां से दुख रही है।
मैंने कहा- पिछली बार तुमने मुकेश के खेत में जो किया था उसके बाद बहुत दुखी थी। मैं आज वो सब नहीं करवाऊंगी।
वो बोला- हां तो मैं कब अंदर डाल रहा हूं ….एक बार दिखा तो मेरी जान …देख तो लूं इतने प्यारे माणस की कहां से दुख रही है ?

कहते हुए उसने सीट पर मेरी टांगे फैलवा दीं और खुद नीचे एडजस्ट होते हुए मेरी टांगों के बीच में बैठ गया। उसने मेरी सफेद पजामी के साथ-साथ मेरी लाल पैंटी भी नीचे खींच दी। और मेरी टांगों को नीचे से नंगी कर दिया।
नंगी करवाकर उसने मेरी टांगों को फैलवा दिया और मेरी योनि के पास मुंह ले जाकर देखने लगा। उसने दोनों हाथों से मेरी जांघों को चौड़ा करके फैला रखा था और मुझे उसके सिर के नीचे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

एकाएक उसने अपने होंठों से मेरी योनि पर किस कर दिया। मेरे बदन में बिजली सी दौड़

गई।
किस करते ही बोला- याड़ै दर्द है के ?
मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

फिर उसने मेरी योनि पर अपने होंठ रख दिए और अपने अंदर की गर्म हवा मेरी योनि पर छोड़ने लगा।

मुझे ऐसा आनन्द पहले कभी नहीं आया था। वो बार-बार सांस भरता और मेरी योनि पर रखे उसके होंठ वो गर्म हवा मेरी योनि की फांकों पर छोड़ देते। मेरी आंखें बंद होने लगीं। मेरी चुदी हुई योनि कि वो ऐसी सिकाई करेगा, मैंने ख्यालों में भी नहीं सोचा था।

तीन-चार बार ऐसा करने के बाद उसने मेरी योनि पर जीभ लगाना भी शुरू कर दिया। मेरी टांगें जैसे अपने आप खुलती जा रही थीं। उसकी जीभ अब नुकीली होकर अंदर तक प्रवेश करने लगी। मैं अपना आपा खोने लगी। मैंने खुद ही अपनी नंगी जांघों को अपने हाथों से उसके मुंह के सामने फैलवा दिया और अपने कमीज को ऊपर ऊठाते हुए ब्रा तक ले गई। मेरा कमीज मेरी छाती में फंसा हुआ था जिसमें से मेरी आधी ब्रा दिख रही थी। मन तो कर रहा था कि अपने वक्षों को भी देवेन्द्र के हाथों के लिए आज़ाद कर दूं मगर सूट बहुत ज्यादा टाइट था। इसलिए ब्रा से लेकर पेट और बाकी नीचे का ही हिस्सा नंगा हो पाया।

देवेन्द्र ने मेरी ब्रा देखते ही अपने हाथ मेरे वक्षों पर टिका दिए और उनको दबाते हुए मेरी योनि में जीभ फिराने लगा। मैं पागल होने लगी।
मैंने उसके सिर को पकड़ कर उसके बालों को सहलाना शुरू कर दिया। उसने जीभ पर और ताकत लगाई और पूरी अंदर तक घुसेड़ दी।

“आह्ह्ह्ह् … मर गई … यार …” मैंने उसको ऊपर उठाने के इशारे से अपने हाथों से पकड़ा और उसके ऊपर उठते ही मैंने उसके होंठों को खुद ही चूसना शुरू कर दिया। उसने

मुझे सीट पर लेटा लिया और अपनी जींस की जिप खोलकर अपने तने हुए लिंग को जिप के बाहर निकालकर मेरे हाथ में दे दिया। मैं उसके लिंग को हाथ में लेकर सहलाते हुए उसके होंठों को चूसने लगी।

वो मेरे ऊपर था और मैं सीट पर नीचे पड़ी थी। मेरी एक टांग नीचे गाड़ी के फर्श को छू रही थी और मेरी दूसरी टांग उठाते हुए देवेन्द्र ने एक हाथ से अपना लिंग मेरी योनि के मुंह पर रखा और मेरे ऊपर लेट गया।
उसका लिंग मेरी योनि में अंदर प्रवेश करने लगा और वो मुझे बुरी तरह चूसने-काटने लगा। मेरी हालत उससे भी बदतर थी। मैं खुद ही उसको पकड़ कर अपने अंदर समा लेना चाह रही थी। उसने मेरी योनि में लिंग का घर्षण करना शुरू कर दिया। मैं उससे लिपट गई।
वो मुझे चोदने लगा और मैं जैसे उसको खाने वाली थी आज! आह्ह्ह … उम्म्म … मेरे सीत्कार के साथ गाड़ी हिलने लगी।

वो भी पागलों की तरह मुझे चूसते हुए मेरी योनि में लिंग को अंदर बाहर करता जा रहा था।
“हाय जान … रश्मि … आई लव यू जान!” कहते हुए उसने स्पीड बढ़ा दी और मैं उसके धक्कों से कराहने लगी।
“आह्ह … मैं मर जाऊंगी … देवेन्द्र!” मैंने कहा।

“ओह … आह्ह …” करते हुए वो मुझे चोदता जा रहा था। काम-क्रीड़ा का इतना सुख पहली बार भोग रही थी मैं। मेरी योनि पच्च … पच्च … की आवाज़ करने लगी थी।
5-6 मिनट की इस कामुक चुदाई का अंत देवेन्द्र ने मेरी योनि में झटके मारते हुए कर दिया। वो धीरे-धीरे शांत हो गया। जाड़े के मौसम में उसके माथे पर पसीना आ गया। वो कुछ पल मेरे ऊपर ऐसे ही लेटा रहा और मुझे होश आया कि हम बीच सड़क पर गांव से

ज्यादा दूर नहीं है।

कहानी जारी है.

himbajanshu@gmail.com

इस कहानी का तीसरा व अन्तिम भाग : जब चुदी-चूत की हुई सिकाई-3

Other stories you may be interested in

जब चुदी हुई चूत की हुई सिकाई-3

इस गर्म कहानी के पिछले भाग जब चुदी-चूत की हुई सिकाई-2 में अभी तक आपने पढ़ा कि मेरी चुदी हुई चूत की सिकाई पहले मैंने की, फिर मेरे यार देवेन्द्र ने गाड़ी में अपने होठों से उसको सेंका। लेकिन सेंकते-सेंकते […]
Full Story >>>

बड़ी चाची की चुदाई देख छोटी को चोदा-3

अभी तक आपने पढ़ा कि मुझे छोटी चाची ने बड़ी चाची की चुदाई देकते पकड़ लिया और अपने कमरे में ले गयी. वहां मैं छोटी चाची की प्यासी जवानी को शांत कर रहा हूँ. अब आगे : चाची फुंफकार मारते हुए […]
Full Story >>>

बड़ी चाची की चुदाई देख छोटी को चोदा-2

अब तक की इस रसभरी चुदाई की कहानी में आपने पढ़ा था कि मैं अपने बड़े चाचा और चाची की चुदाई देख कर मुठ मार चुका था. अब आगे … तभी छोटी चाची मेरे बेड के पास आईं और फुसफुसा […]
Full Story >>>

माँ बेटी की मजबूरी का फायदा उठाया-2

मैं तो बड़ा ही कमीना था, दीपक से पहले मैं दोनों को चोदना चाहता था तो मैं उन मां बेटी से बोला- रिपोर्ट तो कल आएगी, चलो शहर घूमते हैं. मानसी- चलो। सुशीला- नहीं … हम कमरे में चलते हैं। […]
Full Story >>>

जब चुदी हुई चूत की हुई सिकाई-1

नमस्कार दोस्तो, रश्मि की कहानी जनवरी का जाड़ा, यार ने खोल दिया नाड़ा से आगे की कहानी है। पिछली कड़ियों में आपने पढ़ा कि रश्मि के स्कूल का दोस्त देवेन्द्र, अपने साथी मुकेश के साथ मिलकर रश्मि की चूत चोदने […]
Full Story >>>